जयन्त-माणिक के जासूसी कारनामे

मौत का खिलाड़ी

हेमेन्द्र कुमार राय़

अनुवादक
जयदीप शेखर

PREVIEW

मौत का खिलाड़ी

जयन्त-माणिक शृँखला की बँगला जासूसी कहानी
'मॅरॅण खेला'र खेलोयाड़' का हिन्दी अनुवाद

लेखक
हेमेन्द्र कुमार राय

अनुवादक
जयदीप शेखर

जगप्रभा

JAGPRABHA.IN

Cover Photo Credit:
Image by ijeab on Freepik.

-:Hindi eBook :-

MOUT KA KHILADI
(The Player of the Death)
Hindi translation of the Bengali detective story 'Maran Khela'r Kheloyar' from the 'Jayant-Manik' series.
Original author: Hemendra Kumar Roy (1888-1963)
Hindi translation: Jaydeep Das
(Pen Name: Jaydeep Shekhar)
Copyright: © 2023: Translator
Published by:
JagPrabha
Barharwa (Sahibganj), Jharkhand- 816101
jagprabha.in | jagprabha.bhw@gmail.com
Price: ₹ 75.00
***

हेमेन्द्र कुमार राय

(1888 - 1963)

बँगला में किशोर-साहित्य के एक लोकप्रिय कथाकार। बाल-किशोरों के लिए सैकड़ों कहानियों एवं लघु उपन्यासों की रचना की- बड़ों के लिए भी बहुत कुछ लिखा। 1930 से 1960 के दशकों में उनकी कहानियों के बिना बाल-किशोर पत्रिकाएं अधूरी-सी लगती थीं। मुख्यरूप से उन्होंने दुस्साहसिक (Adventure), जासूसी (Detective) और परालौकिक (Supernatural), कहानियाँ लिखी हैं। कहानियों में रहस्य (Mystery), रोमांच (Thrill) और भय (Horror) का ऐसा पुट होता है कि दम साधकर कहानियों को पढ़ना पड़ता है। कुछ कहानियाँ खजाने की खोज (Treasure hunt) और वैज्ञानिक कपोल-कल्पना (Science-fiction) पर भी आधारित हैं। उनकी रची 'कुमार-बिमल' और 'जयन्त-माणिक' श्रृंखलाएं अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुई थीं- पहली दुस्साहसिक कहानियों की तथा दूसरी जासूसी कहानियों की श्रृंखला है। उनकी रची परालौकिक कहानियों को पढ़ने का अलग ही रोमांच है।

***

मौत का खिलाड़ी 6
श्मशान का हत्यारा 6
शव-साधक शशांक 11
श्रीमान सुरेन और जयन्त का शीशा 17
पदचिह्न की कहानी 21
तीन हत्या, तीन लापता 27
लकड़ी के बक्से में क्या था? 30
नूतनपुर का श्मशान 36
कार्य-कारण का इतिवृत्त 46

मौत का खिलाड़ी

श्मशान का हत्यारा

कंक्रीट के दड़बों के वासी। गंगा नदी की कल-कल में सुनायी पड़ती थी मन को सुकुन पहुँचाने वाली संगीत-लहरी!

शाम के समय प्रायः रोज यहाँ आते थे वे। उस दिन भी माणिक के साथ गंगा-किनारे चहल-कदमी करते हुए जयन्त बोला, "देखो भाई, साहेब लोग गड़ के मैदान को कोलकाता का हृदय बताते हैं। हो सकता है; लेकिन मैं इस गंगा को कोलकाता का प्राण कहता हूँ।"

"सो कैसे?"

"जल के बिना प्रकृति का शृंगार पूरा नहीं होता है। इसलिए कृत्रिम उपवन बनाकर भी हम उसमें जल से भरा सरोवर रखना चाहते हैं; लेकिन सरोवर का जल बँधा हुआ होता है। इधर गंगा में है गतिमान जीवन का चंचल उच्छ्वास। दिन के सूर्यालोक में हजारों हीरे की माला पहनकर इठलाती है। रात में नीले आकाश के चाँद-तारों को धरती पर उतारकर किसी स्वप्नलोक का दर्शन कराती है। अन्धेरे में भी उसकी गम्भीर कल-कल निनाद में किसी अनजाने रहस्यलोक की वाणी सुनायी पड़ती है। ईंट-पत्थर-लकड़ी से बने रूखे-सूखे शहर की कर्कश कोलाहल के बीच गंगा दिन-रात नये गीत सुनाती हुई बहती है। यह क्या कम बड़ी बात है? उपवन या मैदान नित्य एक ही दृश्य दिखलाता है, लेकिन गंगा में नित्य नये सौन्दर्य का दर्शन होता है। इसके जलकणों से सिक्त स्निग्ध हवा में आकर खड़े होने से शहरी आपा-धापी की थकावट दो घड़ी में दूर हो जाती है।"

माणिक बोला, "लेकिन गंगातट को कितना गन्दा बना रखा है– यह देख रहे हो कि नहीं? थोड़ी-सी हरी-भरी घास और कुछ पेड़-पौधे होने से जगह कितनी मनोरम हो जाती, लेकिन यहाँ तो लोहे की पटरियों पर शोर मचाती हुई रेलगाड़ी पर रेलगाड़ियाँ भागी जा रही हैं।"

"कोलकाता यदि फ्रान्स का कोई शहर होता, तो गंगातट का रूप बिलकुल बदल गया होता। कम-से-कम मेरा तो यही मानना है।"

गंगातट के राजपथ पर गैस की बत्तियाँ जल जरूर उठी थीं, लेकिन पश्चिमी क्षितिज पर सूर्य को विदायी देने जुटे बादलों के बीच फैली लाल आभा अभी पूरी तरह से बुझी नहीं थी। उसी तरफ देखते हुए जयन्त और माणिक कुछ पल चुपचाप खड़े रहे।

पश्चिम में रंगों का रंगमंच जब कालिमा की यवनिका के पीछे अदृश्य हो गया, तब दोनों दोस्तों ने घर का रास्ता लिया।

जब वे घर के प्रायः करीब पहुँचे, तब उन्हें दिखायी पड़ा कि इंस्पेक्टर सुन्दरबाबू किसी एक सज्जन के साथ बदहवास-से भागे आ रहे थे।

मणिक बोला, "ये तो हमारे सुन्दरबाबू हैं! कहाँ भागे जा रहे हैं दनदनाते हुए?"

सुन्दरबाबू बोले, "हुम्म, और कहाँ? मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक! जयन्त के ही घर जा रहा था।"

जयन्त बोला, "इतनी हड़बड़ी किसलिए?"

"हड़बड़ी का कारण है भाई! जरूरी कारण, बल्कि भयंकर कारण!"

"थोड़ा आभास दीजिए।"

"थोड़ा आभास क्यों, पूरा प्रकाश करूँगा। पहले अपने घर तो चलो!"

सभी एक साथ अग्रसर हुए। जयन्त के घर आकर बैठकखाने में एक कोच पर सुन्दरबाबू और वे सज्जन बैठे। इसके बाद सुन्दरबाबू बोले, "जयन्त, ये सज्जन मेरे मित्र हैं– शशांक। एक विशेष प्रयोजन से इन्हें तुम्हारे पास लेकर आया हूँ।"

जयन्त और शशांक ने परस्पर अभिवादन किया।

सुन्दरबाबू बोले, "ये लोग दो भाई हैं। शशांक और मृगांक। सहोदर नहीं, चचेरे भाई हैं। ये लोग नूतनपुर के जमीन्दार हैं।"

जयन्त ने अब गौर से शशांक का निरीक्षण किया। छह फुट लम्बा कद, चौड़ा सीना, देखकर ही लग रहा था कि सज्जन बहुत बलवान थे और अमीर घराने के थे; लेकिन इस वक्त उनके बाल बिखरे हुए थे, चेहरे पर दुश्चिन्ता की लकीरें थीं और कपड़े अस्त-व्यस्त थे।

जयन्त समझ गया कि सुन्दरबाबू जब स्वयं इन दुश्चिन्ताग्रस्त सज्जन को साथ लेकर किसी विशेष प्रयोजन से उसके पास आये हैं, तो मामला संगीन ही होगा।

एक कुर्सी खींचकर वह बैठते हुए बोला, "नूतनपुर मैं जान रहा हूँ। वह तो कोलकाता के बहुत नजदीक में है।"

सुन्दरबाबू बोले, "हाँ, कोलकाता से बीस-बाईस मील होगा।"

"अब जरा प्रयोजन बताया जाय।"

"बीती रात शशांक के छोटे भाई मृगांक की किसी ने हत्या कर दी है।"

जयन्त कुछ पल चुप रहा, फिर बोला, "इसका मतलब हत्यारा पकड़ा नहीं गया है?"

"नहीं। हत्यारा गिरफ्त में आ जाता, तो बेशक शशांक तुम्हारे पास नहीं आता।"

"लेकिन नूतनपुर में पुलिस थाना रहते उन्हें मेरे पास क्यों आना पड़ गया? साधारण हत्या के मामले में साधारण पुलिस ही काफी है।"

शशांक भर्राये स्वर में बोले, "नहीं जयन्तबाबू, पुलिस काफी नहीं है। मृगांक की इस अकाल मृत्यु से मेरा मन विचलित हो गया है! जितनी जल्दी हो सके, हत्यारे को उसकी सजा दिलाये बिना मुझे चैन नहीं मिलने जा रहा। सुना है कि अपराधी को खोज निकालने में आप सिद्धहस्त हैं। मेरा विश्वास है कि आपकी मदद से पुलिस बहुत जल्दी इस हत्या का पर्दाफाश कर सकेगी।"

"मेरे सम्बन्ध में महाशय की ऊँची धारणा देखकर मैं गर्व अनुभव कर रहा हूँ। ठीक है फिर, सारा घटनाक्रम विस्तार से बताईए।"

शशांक ने बताना शुरू किया, "फिलहाल तो मैं ज्यादा कुछ बता पाने की स्थिति में नहीं हूँ, क्योंकि मैं खुद ही अन्धेरे में हूँ। .....हमारे घर के पीछे एक बड़ा बागान है। उस बागान के किनारे ही दुमंजिले पर मेरे और मृगांक के कमरे हैं। अगल-बगल नहीं हैं, बीच में और भी चार कमरे हैं। कल रात बारह बजे तक मैं जमीन्दारी के कागजात देखने में व्यस्त था। इसके बाद झमा-झम बारिश शुरू हुई। मैं भी सोने चला गया। भोर में जागते ही सुनायी पड़ा– घर में हो-हंगामा और रोना-धोना मचा हुआ था। कमरे से बाहर आते ही नौकरानी ने भागते हुए आकर बताया कि छोटेबाबू को किसी ने मार डाला है! मैं अचम्भित रह गया,

यकीन ही नहीं हुआ, लेकिन भागते हुए जाकर मृगांक के कमरे में अपनी आँखों से जो दृश्य देखा, उसे याद कर अभी भी मैं सिहर उठता हूँ! कमरे के फर्श पर मृगांक का शरीर हाथ-पाँव फैलाये पड़ा हुआ था, उसके गले पर कुछ उँगलियों के निशान थे। देखकर ही लग रहा था कि किसी ने निर्दयतापूर्वक उसका गला दबाकर उसकी हत्या कर दी थी।"

जयन्त ने पूछा, "मृगांकबाबू ने क्या विवाह नहीं किया था? उनके कमरे में और कोई नहीं था?"

"मैं विधुर हूँ और मृगांक ने विवाह नहीं किया था।"

"हत्यारा घर के अन्दर कैसे आया?"

"पुलिस का कहना है कि हत्यारा पिछवाड़े के दरवाजे से बागान में आया था।"

"पिछवाड़े का दरवाजा बन्द नहीं रहता?"

"रहता है, लेकिन घटना के अगले दिन– यानि आज सुबह वह खुला पाया गया। मेरा मानना है कि हत्यारा चहारदीवारी फाँदकर अन्दर आया था और भागते समय दरवाजा खोलकर भागा।"

"सम्भव है।"

"लेकिन पुलिस का कुछ और मानना है। पुलिस के अनुसार, हत्यारा पिछवाड़े के खुले दरवाजे से ही अन्दर आया था।"

"पुलिस के ऐसा मानने के पीछे कारण क्या है?"

"पिछवाड़े के दरवाजे के आस-पास बहुत सारे पैरों के निशान मिले हैं।"

जयन्त उत्साहित स्वर में बोला, "पैरों के निशान?"

"जी हाँ। बताया न, कल रात बारिश हुई थी। रास्ते के कीचड़ में बहुत सारे निशान मिले हैं पैरों के। पुलिस ने उन निशानों का परीक्षण करके बताया है कि हत्यारा सीधे पिछवाड़े के खुले दरवाजे से बागान में आया था। पुलिस ने एक और आश्चर्यजनक बात बतायी है।"

"वह क्या?"

"हमारे घर के पिछवाड़े के दरवाजे से नूतनपुर के श्मशान तक एक कच्ची सड़क जाती है। सड़क हमारी जमीन पर से ही जाती है। इस रास्ते पर लोगों का ज्यादा आना-जाना नहीं है। पुलिस के अनुसार, हत्यारा उस श्मशान से

घटनास्थल तक आया है और हत्या करने के बाद फिर उसी रास्ते से वापस श्मशान लौट गया है।"

आँखें गोल-गोल कर सुन्दरबाबू बोल उठे, "बाप रे, हुम्म! श्मशान से आगमन और श्मशान में ही प्रस्थान? तो क्या हत्यारा इन्सान नहीं है?"

शशांक बोले, "पुलिस का कहना है कि हत्यारे का एक सहयोगी भी था।"

जयन्त बोला, "फिर तो बहुत सारी जानकारियाँ मिल चुकी हैं। खैर, फिलहाल घटनास्थल पर लौटते हैं। पिछवाड़े के दरवाजे से हत्यारे बागान में आये। बागान में उनके पैरों के निशान मिले?"

"नहीं, बागान के रास्ते पर लाल कंकड़ बिछे हुए हैं, उस पर पैरों के निशान नहीं पड़ेंगे।"

"बागान की तरफ से घर में घुसने का जरूर कोई दरवाजा होगा।"

"है, लेकिन वह घटना के बाद भी बन्द था। हत्यारे जरूर किसी और तरीके से घर में घुसे होंगे और उसी तरीके से निकले होंगे।"

"मृगांकबाबू के कमरे में वे कैसे घुसे थे?"

"मृगांक की एक बुरी आदत थी, गर्मियों और बरसात में वह उमस के समय कमरे के दरवाजे-खिड़कियाँ बन्द नहीं करता था।"

"जमीन्दार-घर में बहुत सारे लोग होने चाहिए, किसी ने हत्यारों की आहट नहीं सुनी?"

"किसी ने नहीं। हत्यारे मानो साये की तरह आये और गये थे।"

"मृगांकबाबू के कमरे से कुछ चोरी गया है?"

"धेला भी नहीं।"

"तो फिर उनकी हत्या के पीछे उद्देश्य क्या है? किसी के साथ उनकी दुश्मनी थी?"

शशांक कुछ पल चुप्पी साधे रहे। इसके बाद धीरे-धीरे बोले, "मेरे मन में जो सन्देह है– वह बताता हूँ। नूतनपुर के श्मशान में कालभैरव का एक पुराना मन्दिर है। हमारे ही द्वारा नियुक्त एक पुजारी रोज वहाँ पूजा-अर्चना कर आता है। तीन दिनों पहले पुजारी ने वहाँ जाकर देखा– कहीं से एक सन्न्यासी आकर मन्दिर में डेरा जमाये बैठा था। कहने लगा, अब से वही यहाँ का सेवायत होगा, किसी और को मन्दिर में नहीं घुसने देगा। पुजारी ने आकर हम लोगों से

शिकायत की। यह परसों सुबह की बात है। मृगांक बहुत गुस्सैल मिजाज का व्यक्ति था। वह उसी समय गुस्से में दनदनाते हुए श्मशान जा पहुँचा और उस सन्न्यासी की उसने पिटाई कर दी और साथ में उसे उसे चेतावनी दी– 'अगर कल मैंने तुम्हें यहाँ देखा, तो जान से ही मार डालूँगा!' सन्न्यासी परसों रात में ही भाग गया, लेकिन सुनने में आया कि जाते समय वह शपथ उठाकर गया था कि तीसरी रात के बीतने से पहले वह अपने अपमान का प्रतिशोध लेगा!"

"तो आपका यकीन है कि इस हत्या के पीछे उसी सन्न्यासी का हाथ है?"

"यकीन नहीं, सन्देह।"

"सन्न्यासी को नूतनपुर में कोई नहीं पहचानता?"

"नहीं, लोगों ने उसे पहली बार ही देखा था।"

"तो फिर उसने कैसे आपके घर का रास्ता वगैरह पहचान लिया? कैसे उसने जाना कि मृगांकबाबू किस कमरे में सोते हैं?"

"इन सवालों का जवाब देना मुश्किल है।"

"आपने जो कुछ बताया, उससे लग रहा है कि सबसे पहले हमें आपका घर देखना चाहिए। मोटर से जाने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। क्या सुन्दरबाबू भी हमारे साथ चलना चाहेंगे?"

"हुम्म, नहीं! छुट्टी नहीं है। हो सका, तो बाद में जाऊँगा। .....और सच बात को क्या छुपाना– हत्यारा जहाँ श्मशान से आता हो और श्मशान में ही लौट जाता हो, वहाँ तुम लोग मुझे पाने की उम्मीद मत रखो!"

शव-साधक शशांक

चार बड़े-बड़े महलों तथा एक विशाल बागान के साथ नूतनपुर का जमीन्दार-भवन प्रायः तीस-पैंतीस बीघे जमीन पर बना हुआ था। पुराने जमाने की अट्टालिका, नियमित देख-भाल के अभाव में मलिन एवं जीर्ण हो रही थी। ज्यादातर कमरे अन्धेरे में डूबे हुए थे, दूर-दूर में इक्के-दुक्के किरासन-लैम्प धुंधली रोशनी देते हुए जल रहे थे।

तीक्ष्ण दृष्टि से यह सब गौर करने के बाद जयन्त और माणिक समझ गये कि शशांकबाबू लोग जमीन्दार भले हैं, लेकिन उनकी आर्थिक अवस्था बहुत अच्छी नहीं चल रही है।

शशांक पहले उन्हें बागान में ले गया। बागान कहने से हम लोग जो समझते हैं– यह वैसा नहीं था। फल-फूलों के छोटे पेड़-पौधे यहाँ नहीं थे, बल्कि बाबा आदम के जमाने के बूढ़े-बूढ़े पीपल, बरगद, आम, जामुन, कटहल, ताड़, नारियल इत्यादि के पेड़ों ने यहाँ-वहाँ उगकर बाकायदे एक जंगल की रचना कर रखी थी। टॉर्च की रोशनी इधर-उधर फेंकते हुए जयन्त और माणिक ने एक विशाल तालाब देखा, जिसकी सतह हरी जलकुम्भियों की चादर से ढकी हुई थी, लेकिन बीच-बीच में कहीं काला पानी भी चमक रह रहा था, मानो वहाँ चादर फटी हुई हो।

माणिक ने कहा, "शशांकबाबू, आप लोग तो देख रहा हूँ कि बाकायदे मलेरिया की खेती कर रहे हैं। इस तालाब में रोज कितने लाख मच्छर पनपते हैं– इसका अन्दाजा है आपको?"

शशांक म्लान हँसी हँसकर बोले, "आजकल हमारे बुरे दिन चल रहे हैं। सुना है कि पहले हमारी सालाना आय पाँच लाख रुपये हुआ करती थी, लेकिन आज वह आय घटकर सालाना बीस हजार पर आ गयी है।"

जयन्त ने पूछा, "मृगांकबाबू ने जब विवाह नहीं किया था, तो उनके हिस्से की सम्पत्ति तो आप ही को मिलेगी?"

"हाँ, लेकिन भाई के हिस्से की सम्पत्ति पर अधिकार मुझे जहर के समान लग रहा है। मृगांक की पत्नी और बच्चे रहने पर ही मुझे खुशी मिलती।"

चलते हुए सभी पिछले दरवाजे के पास पहुँच गये।

शशांक दरवाजे का पल्ला खोलकर बोले, "यहीं पैरों के निशान मिले थे।"

जयन्त ने जमीन पर टॉर्च की रोशनी डालते हुए कहा, "आज दिन के समय भी यहाँ बारिश हुई थी?"

"हाँ, जोरदार।"

"दिख तो रहा है। सारे निशान प्रायः धुलकर मिट गये हैं। मेरा दुर्भाग्य! देखने से मुझे लाभ होता। शशांकबाबू, ये जो पैरों के निशान होते हैं, ये हजारों साल से चोर-डकैत-हत्यारों को पकड़वाने में काम आ रहे हैं। जिनकी आँखों और मस्तिष्क

में क्षमता होती है, वे पदचिह्नों से काफी सारी गोपनीय जानकारियाँ हासिल कर सकते हैं।"

शशांक बोले, "ऐसा सुना तो है, लेकिन चिन्ता की बात नहीं है; पुलिस के पास से आपको पैरों के निशान के बारे में काफी जानकारियाँ मिल जायेंगी।"

"अपनी आँखों से देखने और दूसरे के मुँह से सुनने में अन्तर है। फिर भी, न मामा से काना मामा बेहतर। कौन आये थे यहाँ जाँच करने?"

"थाने के एक सब-इंस्पेक्टर, नाम– कुमुदबाबू। उम्र कम है, उत्साह बहुत है।"

"कल सुबह ही उनके पास ले चलें, तो अच्छा रहेगा। फिलहाल चलिए, आपके घर की ओर चला जाय।"

घर के नजदीक पहुँचकर जयन्त ने पूछा, "बागान की ओर से घर में घुसने का दरवाजा कहाँ है?"

"उधर है, लेकिन आपको तो बताया था कि हत्यारा उस दरवाजे से अन्दर नहीं घुसा था। हत्या के बाद भी वह दरवाजा अन्दर से बन्द था।"

वहीं खड़े-खड़े भवन को अच्छे-से देखने के बाद जयन्त बोला, "माणिक, तुम शशांकबाबू के साथ यहीं खड़े-खड़े गपशप करो, तब तक मैं घर का एक चक्कर लगाकर आता हूँ।"

कहकर जयन्त चला गया।

शशांक बोले, "माणिकबाबू, आपके दोस्त का नाम तो मैंने बहुत सुन रखा है। आपको क्या लगता है– इस मामले को वे सुलझा सकेंगे?"

"जयन्त ने इससे कहीं ज्यादा पेचीदा मामलों को सुलझाया है।"

शशांक ने और कुछ नहीं कहा।

करीब पन्द्रह मिनट बाद जयन्त दूसरी दिशा से चलते हुए वापस आ गया। उसे बार-बार सूँघनी सूँघते देख माणिक आश्वस्त हुआ; क्योंकि वह जानता था कि कोई सुराग हाथ लगने के बाद उसका दोस्त बार-बार नसवार सूँघने लगता था।

जयन्त आकर बोला, "शशांकबाबू, आपके जिस पूर्वज ने इस भवन को बनवाया था, वे बहुत होशियार व्यक्ति थे।"

"यह बात आप कैसे कह रहे हैं?"

"चारों तरफ से मैंने बार-बार कोशिश की, लेकिन बाहर से किसी भी तरीके से मैं दुमंजिले पर नहीं चढ़ पाया।"

"तो फिर हत्यारा दुमंजिले पर किस तरह से गया?"

जयन्त ने सहज भाव से कहा, "घर के अन्दर से किसी ने हत्या से पहले और बाद में इस दरवाजे को खोला और बन्द किया है।"

शशांक जोरदार तरीके से सिर हिलाकर बोला, "नहीं, यह असम्भव है!"

"तो फिर कहना होगा कि हत्या से पहले और बाद में यह दरवाजा खुला हुआ था।"

"नहीं, यह भी असम्भव है! मैंने खुद दरवाजा बन्द देखा था!"

"तो फिर घर में कोई गुप्तद्वार है, जिसकी जानकारी हत्यारे को है।"

शशांक व्यंग्य के साथ बोले, "और मैं घर का मालिक, उसकी जानकारी नहीं रखता।"

जयन्त हँसते हुए बोला, "घर के मालिक को मैं और एक नयी जानकारी देना चाहूँगा। पता है– मैं जब घर को चारों तरफ से देखने में व्यस्त था, तब एक आदमी अन्धेरी झाड़ियों में छुपकर मेरा कार्यकलाप देख रहा था! बता सकते हैं कि वह कौन है?"

शशांक पहले तो हतप्रभ रह गये। फिर थोड़ी व्यग्रता के साथ बोले, "क्या कह रहे हैं? ठहरिए जरा, अभी दरबान को हुक्म देता हूँ उस बदमाश को पकड़ लाने के लिए! सत्यानाश, घर के अन्दर दुश्मन! .....चौबे! पाँड़े!"

"बेकार में मत बुलाईए दरबान को। मैंने उसे पकड़ने की कोशिश की थी, नहीं सका। अब तक वह पहुँच से बाहर जा चुका है।"

"लेकिन आपकी बात सुनकर तो मेरा कलेजा काँप गया है! घर के अन्दर दुश्मन! मैं भी बेमौत मारा जाऊँगा क्या?"

"सावधान रहने से डर किस बात की? अभी चलिए, मृगांकबाबू का कमरा देख लिया जाय।"

घर में प्रवेश कर जयन्त फर्श एवं दीवारों पर टॉर्च की रोशनी डालते हुए आगे बढ़ने लगा। सीढ़ियाँ चढ़ते वक्त दूसरी धाप पर ही ठहरकर वह बोला, "शशांकबाबू, हत्यारे द्वारा गला दबाने के चलते मृगांकबाबू के मुँह से खून निकल आया था क्या?"

शशांक विस्मित स्वर में बोले, "निकला था, लेकिन आपने कैसे जाना?"

"देखिए।" कहकर जयन्त ने दीवार पर एक जगह टॉर्च की रोशनी स्थिर की।

माणिक और शशांक दोनों ने देखा– दीवार पर थोड़ा-सा लाल दाग लगा हुआ था।

जयन्त बोला, "हत्यारे के हाथ में खून लग गया था। सीढ़ियाँ उतरते वक्त वही हाथ किसी तरह से दीवार से सट गया था।"

शशांक आँखें गोल-गोल किये चुप रह गये।

माणिक बोला, "यह दाग ही प्रमाणित कर रहा है कि हत्या के बाद हत्यारा जब सीढ़ियों से नीचे उतरा है, तो वह बागान वाले दरवाजे से ही बाहर गया है।"

जयन्त बोला, "हूँ। जबकि शशांकबाबू ने घटना के बाद दरवाजा बन्द देखा। उस दरवाजे को अन्दर से बन्द किसने किया?"

माणिक बोला, "क्या वही आज अन्धेरे में तुम पर नजर रख रहा था?"

"शशांकबाबू, आपके घर के प्रत्येक व्यक्ति के साथ मेरा परिचय करवा देना होगा।"

शशांक एक गहरी साँस छोड़कर बोले, "जो आज्ञा।"

"अब चलिए मृगांकबाबू के कमरे में।"

मृगांक का कमरा बागान के बिलकुल ऊपर था। वहाँ शव बेशक नहीं था, फिर भी, कमरे में घुसकर सबको अदृश्य मृत्यु का कैसा एक डरावना अहसास हुआ! अन्धेरे बागान से हवाओं के साथ रातरानी और चम्पा की मिली-जुली खुशबू तैरती हुई आ रही थी। कल शायद इस खुशबू का उपभोग मृगांक भी कर रहा था, लेकिन आज वह खुशबू प्रकृति का निष्ठुर परिहास जान पड़ रहा था।

कमरा भली-भांति सजा-संवरा हुआ था– एक तरफ पलँग, बीच में संगमर्मर का गोल टेबल और कुछ गद्दीदार कुर्सियाँ, दूसरी तरफ किताबों से भरी आलमारी। यहाँ-वहाँ छोटी-छोटी तिपाईयों पर संगमर्मर की मूर्तियाँ सजी थीं और दीवारों पर विख्यात शिल्पियों की चुनी हुई कलाकृतियाँ लटक रही थीं।

जयन्त बोला, "कमरा देखकर मालिक का स्वभाव पता चलता है। मृगांकबाबू शौकीन, रसिक और विद्वान व्यक्ति थे।"

शशांक बोले, "ठीक है, लेकिन वह विद्वान था– यह आप कैसे कह रहे हैं?"